गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन

खोज गाँधीजी की

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव की मासिक पत्रिका; मार्च, २०२०

बा-बापू१५०
१८६९-२०१९

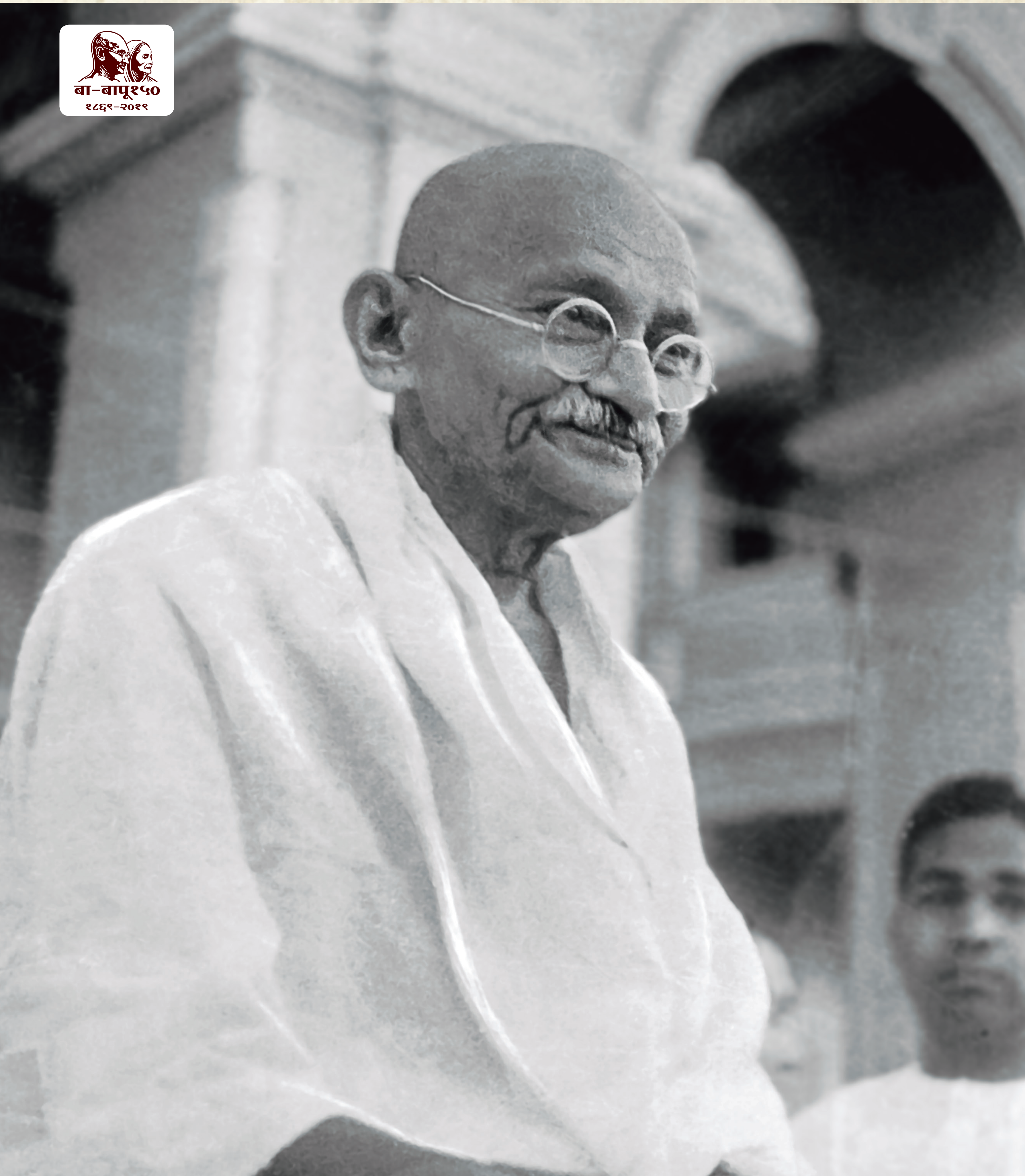

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, जलगाँव द्वारा प्रकाशित –

खोज गाँधीजी की

सत्य व अहिंसापरक विचारों को समर्पित

वर्ष–२, अंक ३ □ मार्च, २०२०

सत्य ही धर्म की सच्ची प्रतिष्ठा है।

– महात्मा गाँधी

इस अंक में– .... पृष्ठ

संपादकीय ....

आत्मकथा, प्रकरण–१२, हिंदुस्तानियों से परिचय १

Contributions by GRF Research Fellows:
Learning form the legacy of Gandhi.......................... ३

गाँधीः आत्मशक्ति की प्रकाश किरण.................................... ६

गाँधी तीर्थ सेः

खोज या प्रयोग का पहलू हुआ नजरंदाज–*डॉ.डी.आर. मेहता* ८

सेवा और साहस का दीप स्तंभः गाँधी तीर्थ–*दलीचंद ओसवाल*. ९

फाउण्डेशन की गतिविधियां...................................... १०–१७

संस्थापक
स्व. डॉ. भवरलालजी जैन

प्रेरक
स्व. न्या. चंद्रशेखर धर्माधिकारी

प्रबंध संपादक
अशोक जैन

संपादक
अश्विन झाला

संपादकीय मंडल
डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, भुजंगराव बोबडे

कला एवं अक्षर–सज्जा
योगेश संधानसिवे एवं भूषण मोहरीर

संपादकीय कार्यालय
गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन,
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स संख्या 118, जलगाँव – 425 001.
दूरभाष : 0257-2260011/22, 2264801/03, मोबाईलः 9404955272;
वेबसाइट : www.gandhifoundation.net;
ई–मेल : info@gandhifoundation.net; CIN No. : U73200MH2007NPL169807

....

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि. जलगाँव– ४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव–४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला*
(पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।)*

....

मुखपृष्ठ छायाचित्रः महात्मा गाँधी प्रार्थना सभा के दौरान, रूंगटा हाऊस, बॉम्बे, सितम्बर १९४४।

संपादकीय...

गाँव की ओर क्यों चले?

खुशखुशाल जीवन जीने के लिए हमें शुद्ध हवा, शुद्ध पानी व शुद्ध खुराक की आवश्यकता होती ही है। यह सामग्री शुद्ध मिले ऐसा हर कोई चाहता है। हालांकि मूलभूत सामग्री के लिए हम अन्य पर आधार रखते हैं। इनमें भी खुराक के संदर्भ में हम ग्रामीण भाग पर निर्भर रहते हैं। यहाँ तक की सुबह उठते ही लगने वाला दूध व सब्जी या अनाज इन सभी सामग्री का आधार अधिकतर ग्रामीण भाग है।

उपरोक्त बात के साथ स्वाभाविक रूप से हम सब सहमत होंगे। उनमें भी कोशिश करते हैं कि हमें खुराक के संदर्भ में मिलने वाली सामग्री रसायन मुक्त हो। जब हम फाउण्डेशन के माध्यम से जैविक कृषि की आदत निर्माण करने का प्रयास करते हैं। इस सिलसिले में कई किसानों से हमारी मुलाकात होती हैं। हमने यह पाया कि किसान अपनी खेती के उत्पादन को बढ़ाने के लिए विभिन्न तरह की तरकीब करते हैं। उनमें रासायनिक पदार्थों का समावेश अधिक है। यह पूरी फसल वह बाजार में बेच देते हैं, किंतु अपने लिए आवश्यक सामग्री का उत्पादन करते हैं उनमें वे रासायनिक पदार्थ का प्रयोग न करते हुए जैविक तरीकों से उत्पन्न करते हैं। किसान को ऐसा क्यों करना पड़ रहा है? कहीं न कहीं इसके जिम्मेदार हम सब है। अगर हमें हमारा अस्तित्व टिकाना है तो कृषि, किसान और गाँव का अस्तित्व टिकाना अत्यंत जरूरी है। गाँव तो अपना अस्तित्व टिका ही लेगा, किंतु हमें हमारा अस्तित्व टिकाना है तो गाँव के साथ हमारे रिश्ते को अधिक जीवंत रूप में जोड़ने की जरूरत है। विश्व आरोग्य संस्था ने एक चेतावनी देते हुए कहा है कि भारत में प्रयोग में लाए जानेवाले रासायनिक पदार्थों को नियंत्रित नहीं किया गया तो आने वाले एक दशक में वहाँ स्थित लोगों में कैंसर की मात्रा अधिक रूप में बढ़ जाएगी।

किसान ऐसा क्यों करते हैं? इसे भी समझने की जरूरत है। अकसर देखा गया है कि गाँव में पर्याप्त सुविधाओं का अभाव ही इन सब स्थिति का कारण है। हमारे किसी भी शहर में आप जाइए वहाँ आपको एक अच्छा जीवन बिताने के लिए पर्याप्त संसाधन मिलेंगे। उसी शहर से आप केवल १० से १५ कि.मी. दूर निकलकर बाहर आइए, आपको यहाँ एक ऐसा भी प्रदेश देखने को मिलेगा जिसके पास पर्याप्त संसाधन भी नहीं है। यह दोनों प्रदेश की स्थिति बिलकुल विपरीत है। शहर और गाँव दोनों को देखते हैं तब ऐसा लगता है एक उत्तर है तो दूसरा दक्षिण। अब ऐसी स्थिति में एक बात स्पष्ट दिखाई देती है वह यह कि हम गाँव से शुद्ध सामग्री चाहते हैं पर गाँव नहीं।

शाश्वत जीवनशैली हम अकेले प्राप्त नहीं कर सकते, यह सामूहिक प्रक्रिया है। हम दूसरे के कल्याण के द्वारा ही खुद का कल्याण कर सकते हैं। इस बात को अगर हम अब भी नहीं समझ पाए तो नतीजा हमारे सामने है। इस संदर्भ में हम सब लोगों को मिलकर क्या करना चाहिए इस विषय में आपकी राय हमें अवश्य लिखे...

इस अंक में सत्य के प्रयोग से अगला प्रकरण, फाउण्डेशन के रिसर्च फैलो समीर बेनरजी का शोध लेख, गाँधी का प्रभाव दर्शाता कार्ल हीथ का एक लेख, फाउण्डेशन के संचालक अशोक जैन की गाँधी तीर्थ के प्रति भूमिका तथा फाउण्डेशन की गतिविधियां प्रस्तुत कर रहे हैं।

धन्यवाद,

(अश्विन झाला)

सत्य के प्रयोग
– मोहनदास करमचंद गाँधी

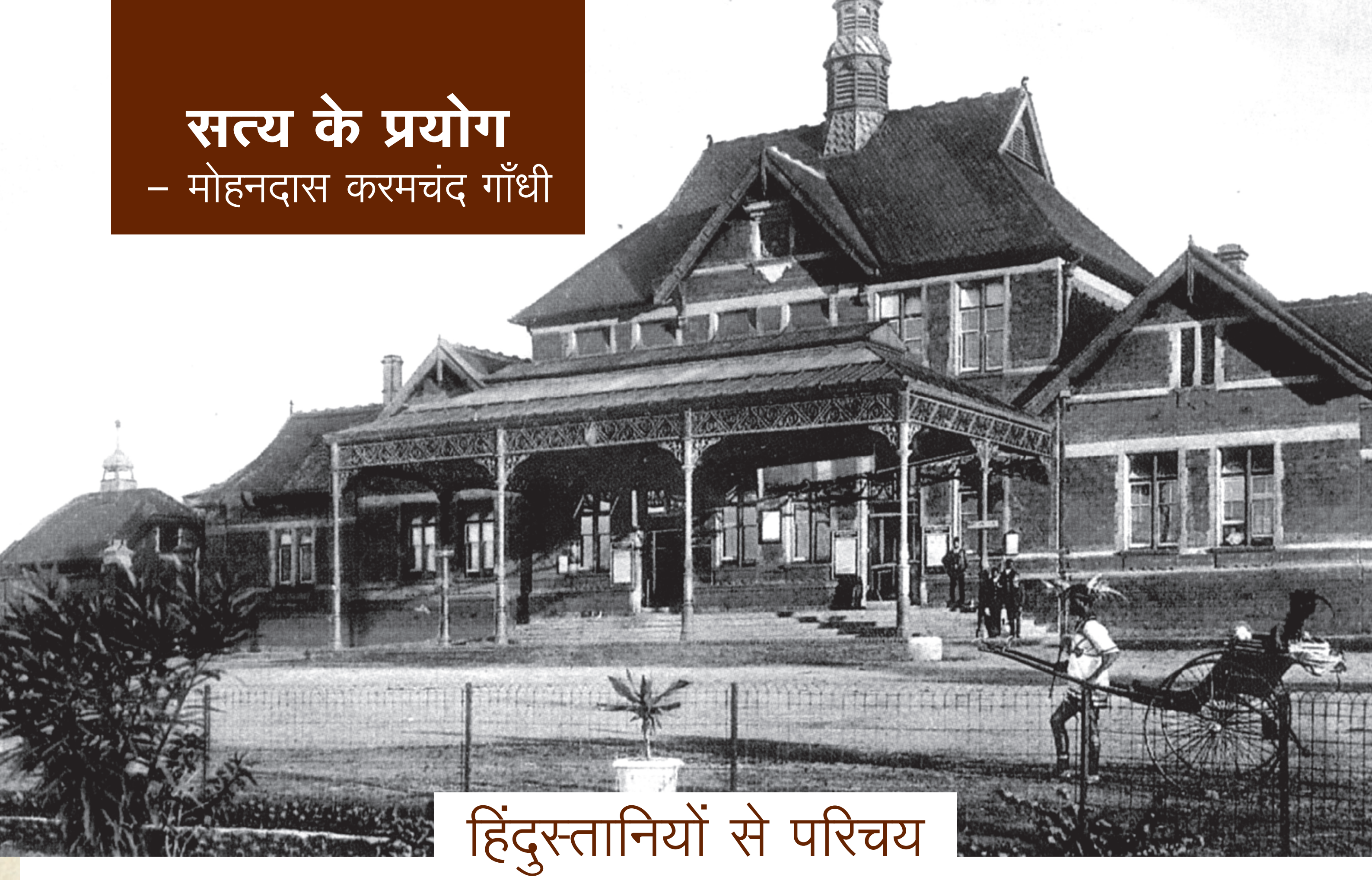

हिंदुस्तानियों से परिचय

*‘**खोज गाँधीजी की**’ के प्रत्येक अंक में महात्मा गाँधी द्वारा लिखे ‘सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा’ से एक लेख धारावाहिक रूप में दिया जा रहा है। इसके पीछे उद्देश्य यह है कि जनमानस महात्मा गाँधी की आत्मकथा से उन्हीं के शब्दों में परिचित हो सके। दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए गाँधीजी ने सभी हिंदुस्तानियों की स्थिति का जायजा ले लिया था। वे वहाँ बसे सभी धर्म व संप्रदाय के लोगों के साथ अच्छी तरह से जुड़ने लगे थे। उनके साथ जुड़ने की गाथा को आत्मकथा के भाग २ से प्रकरण १२ हमारे पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।*

– संपादक

ईसाई – संबंधों के बारे में अधिक लिखने से पहले उसी समय के दूसरे अनुभवों का उल्लेख करना आवश्यक है।

नेटाल में जो स्थान दादा अब्दुल्ला का था, प्रिटोरिया में वही स्थान सेठ तैयब हाजी खानमहम्मद का था। उनके बिना एक भी सार्वजनिक काम चल नहीं सकता था। उनसे मैंने पहले ही हफ्ते में जान–पहचान कर ली। मैंने उन्हें बताया कि मैं प्रिटोरिया के प्रत्येक हिंदुस्तानी के संपर्क में आना चाहता हूँ। मैंने हिंदुस्तानियों की स्थिति का अध्ययन करने की अपनी इच्छा प्रकट की और इन सारे कामों में उनकी मदद चाही। उन्होंने खुशी से मदद देना कबूल किया।

मेरा पहला कदम तो सब हिंदुस्तानियों की एक सभा करके उनके सामने सारी स्थिति का चित्र खड़ा कर देना था। सेठ हाजी महम्मद हाजी जूसब के यहाँ यह सभा हुई, जिनके नाम मेरे पास एक सिफारिशी पत्र था। इस सभा में मेमन व्यापारी विशेष रूप से आये थे। कुछ हिन्दू भी थे। प्रिटोरिया में हिंदुओं की आबादी बहुत कम थी।

यह मेरे जीवन का पहला भाषण माना जा सकता है। मैंने काफी तैयारी की थी। मुझे सत्य पर बोलना था। मैं व्यापारियों के मुँह से यह सुनता आ रहा था कि व्यापार में सत्य नहीं चल सकता। इस बात को मैं तब भी नहीं मानता था, आज भी नहीं मानता। यह कहनेवाले व्यापारी मित्र आज भी मौजूद हैं कि व्यापार के साथ सत्य का मेल नहीं बैठ सकता। वे व्यापार को व्यवहार कहते हैं, सत्य को धर्म कहते हैं और दलील यह देते हैं कि व्यवहार एक चीज है, धर्म दूसरी। उनका यह विश्वास है कि व्यवहार में शुद्ध सत्य चल ही नहीं सकता; उसमें तो सत्य यथाशक्ति ही बोला–बरता जा सकता है। अपने भाषण में मैंने इस स्थिति का डटकर विरोध किया और व्यापारियों को उनके दोहरे कर्तव्य का स्मरण कराया। परदेश में आने से उनकी जिम्मेदारी देश की अपेक्षा अधिक हो गयी है, क्योंकि मुट्ठीभर हिंदुस्तानियों की रहन–सहन से हिंदुस्तान के करोड़ों लोगों को नापा–तोला जाता है।

अंग्रेजों की रहन–सहन की तुलना में हमारी रहन–सहन गंदी है, इसे मैं देख चुका था। मैंने इसकी ओर भी उनका ध्यान खींचा। हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई अथवा गुजराती, मद्रासी, पंजाबी, सिन्धी, कच्छी, सूरती आदि भेदों को भुला देने पर जोर दिया।

अन्त में मैंने यह सुझाया कि एक मण्डल की स्थापना करके हिंदुस्तानियों के कष्टों और कठिनाइयों का इलाज अधिकारियों से मिलकर और अर्जियाँ भेजकर करना चाहिए, और यह सूचित किया कि मुझे जितना समय मिलेगा उतना इस काम के लिए मैं बिना वेतन के दूँगा।

मैंने देखा कि सभा पर मेरी बातों का अच्छा प्रभाव पड़ा।

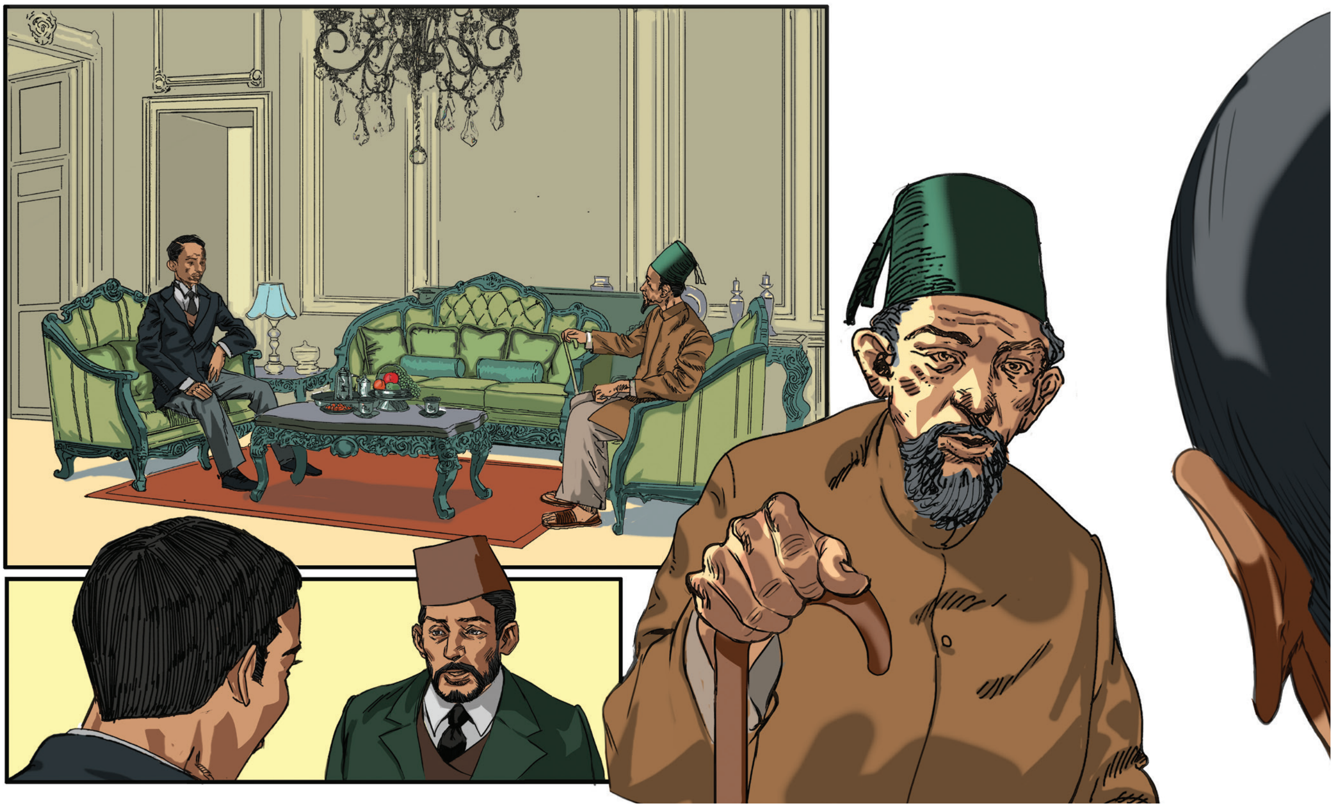

मेरे भाषण के बाद चर्चा हुई। कइयों ने मुझे तथ्यों की जानकारी देने को कहा। मेरी हिम्मत बढ़ी। मैंने देखा कि इस सभा में अंग्रेजी जाननेवाले कुछ ही लोग थे। मुझे लगा कि ऐसे परदेश में अंग्रेजी का ज्ञान हो तो अच्छा है। इसलिए मैंने सलाह दी कि जिन्हें फुरसत हो वे अंग्रेजी सीख लें। मैंने यह भी कहा कि अधिक उमर हो जाने पर भी पढ़ा जा सकता है, और इस तरह पढ़नेवालों के उदाहरण भी दिए। और कोई क्लास खुले तो उसे अथवा छुट-पुट पढ़नेवाले मिलें तो उन्हें पढ़ानेवाले मिलें तो उन्हें पढ़ाने की जिम्मेदारी मैंने खुद अपने सिर ली। क्लास तो नहीं खुला, पर तीन आदमी अपनी सुविधा से और उनके घर जाकर पढ़ाने की शर्त पर पढ़ने के लिए तैयार हुए। इनमें दो मुसलमान थे। दो में से एक हज्जाम था। और एक कारकुन था। एक हिन्दु छोटा दुकानदार था। मैंने सबकी बात मान ली। पढ़ाने की अपनी शक्ति के विषय में तो मुझे कोई अविश्वास था ही नहीं। मेरे शिष्यों को थका मानें तो वे थके कहे जा सकते हैं, पर मैं नहीं थका। कभी ऐसा भी होता कि मैं उनके घर जाता और उन्हें फुरसत न होती। पर मैंने धीरज न छोड़ा। इनमें से किसी को अंग्रेजी का गहरा अध्ययन तो करना ही न था। पर दोने करीब आठ महिनों में अच्छी प्रगति कर ली, ऐसा कहा जा सकता है। दोने हिसाब किताब रखना और साधारण पत्र-व्यवहार करना सीख लिया। हज्जाम को तो अपने ग्राहकों के साथ बातचीत कर सकने लायक ही अंग्रेजी सीखनी थी। दो व्यक्तियों ने अपनी इस पढ़ाई के कारण ठीक-ठीक कमाने की शक्ति भी प्राप्त कर ली थी।

सभा के परिणाम से मुझे संतोष हुआ। निश्चय हुआ कि ऐसी सभा हर महिने या हर हप्ते की जाय। यह सभा न्यूनाधिक नियमित रुप से होती थी, और उसमें विचारों का आदान-प्रदान होता रहता था। नतीजा यह हुआ कि प्रिटोरिया में शायद ही कोई ऐसा हिंदुस्तानी रहा होगा, जिसे मैं पहचानने न लगा होऊँ अथवा जिसकी स्थिति से मैं परिचित न हो गया होऊँ। हिंदुस्तानियों की स्थिति का ऐसा ज्ञान प्राप्त करने का परिणाम यह आया कि मुझे प्रिटोरिया में रहनेवाले ब्रिटिश एजेण्ट से परिचय करने की इच्छा हुई। मैं मि. जेकोब्स डि-वेट से मिला। उनकी सहानुभूति हिंदुस्तानियों के साथ थी। उनका प्रभाव कम था, पर उन्होंने यथासम्भव मदद करने और मिलना हो तब आकर मिल जाने के लिए कहा। रेलवे के अधिकारियों से मैंने पत्र-व्यवहार शुरू किया और बतलाया कि उन्हीं के कायदों के अनुसार हिंदुस्तानियों को ऊँचे दर्जे में यात्रा करने से रोका नहीं जा सकता। इसके परिणाम-स्वरूप यह पत्र मिला कि अच्छे कपड़े पहने हुए हिंदुस्तानियों को ऊँचे दर्जे के टिकट दिये जाएंगे। इससे पूरी सुविधा नहीं मिली, क्योंकि अच्छे कपड़े किसने पहने हैं, इसका निर्णय तो स्टेशन - मास्टर को ही करना था न?

ब्रिटिश एजेण्टने मुझे हिंदुस्तानियों के बारे में हुए पत्र-व्यवहार संबंधी कई कागज पढ़ने को दिये। तैयब सेठने भी दिये थे। उनसे मुझे पता चला कि ऑरेन्ज फ्री स्टेट से हिन्दुस्यानियों को किस निर्दयता के साथ निकाल बाहर किया गया था। सारांश यह कि ट्रान्सवाल और ऑरेन्ज फ्री स्टेट के हिंदुस्तानियों की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति का गहरा अध्ययन मैं प्रिटोरिया में कर सका। इस अध्ययन का आगे चलकर मेरे लिए पूरा उपयोग होनेवाला है, इसकी मुझे जरा भी कल्पना नहीं थी। मुझे तो एक साल के अंत में अथवा मुकदमा पहले समाप्त हो जाए तो उससे पहले ही स्वदेश लौट जाना था।

पर ईश्वरने कुछ और ही सोच रखा था।

–'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' से साभार, पृष्ठ क्र.११३–११६, क्रमश:

Contributions by GRF Research Fellows

Learning from the legacy of Gandhi

I am (Samir Banerjee) seventy now. Since about 1970, I have been involved in activities related to social transition and transformation in many parts of the country such as Tamil Nadu, Odisha, M.P., Maharashtra and Karnataka. These activities have been in the non-governmental sector on issues related to appropriate technology, slum rehabilitation, non-formal education, environmental studies, watershed development, organic farming and informal studies regarding social change and continuity. Over the last few decades I have also focused on Gandhian studies. Some of my publications are as follows;

Bas eak kadam aur (1999, IIAS), Contributions Towards an Agenda for India (2001, IIAS), Notes from Gandhigram: Challenges to Gandhian Praxis (2009, Orient Blackswan), Tracing Gandhi: Satyarthi to satyagrahi (2020, Routledge)

For some time I have been working on putting together a compendium on Gandhian thought. What this should contain and why it is necessary are perhaps the core questions. Over the decades we have seen Gandhi, his work and his ideas quoted, extolled and generally used for all kinds of social involvement and analysis. Strategies, tactics, policies and a wide range of insights have been crafted around or out of what Gandhiji stood for. While he himself was against the creation of a 'Gandhism', his world-view, lifestyle and socio-political involvement practices have contributed to a wide range of original and seminal ways of articulating social discourse. As a matter of fact, over the years these specific believes and practices propagated by Gandhi such as *ahimsa, swadeshi, satyagraha,* etc. have evolved into concepts, even heuristic aids.

In many ways while we recognize the rich potential of Gandhian thought, yet being unclear about what it constitutes, we remain wary about its use, particularly because Gandhi himself had warned against creating an 'ism' around his thoughts and practices. He wrote, "Gandhi is one thing, Gandhism is another and Gandhi-ites are a third thing. There are always, and will remain, such differences. Immature people may identify themselves with one or the other group". Maybe as a consequence, a rich potential is shriveling.

Obviously the following question can be asked: 'what is Gandhian thought'? 'The spirit behind Gandhian thought as distinct from Gandhism', could be one answer; it was also 'the way Gandhi understood tradition'. He wrote, "The true dharma is unchanging, while tradition may change with time". Thus Gandhian thought is not just quotations of what the Mahatma said. It is more. It includes the rich heritage from which he drew insights, elaborations of people who explicitly followed him as his disciples, usage as in Gandhian practices by Gandhi and his followers, as well as the insights offered by Gandhian scholars and critics. In effect, in a very broad sense

Gandhian thought is a world-view and an engagement with the human dilemma of necessity and choice as well as that of change and continuity.

This is a large canvas. But, Gandhi in his extensive writings, communications and practices, gives a lot of ideas about what as social beings we need to retain and what to change, what is necessary and what we can choose if we have a choice in the processes of social transition and transformation. Above all, while Gandhi's canvas was society, his focus always was the individual human being, particularly the dispossessed, the disabled and the discriminated. Our job now is to recognize the essential thrust of his narrative, and this can be done by understanding the concepts which initiated and instructed his narrative.

This, of course, is a long-term project. I am happy that the Gandhi Research Foundation offered me a fellowship to pursue my efforts. I was at the GRF from the middle of August to the beginning of October 2019. Obviously I have not been able to complete the project in the short time that I was at the GRF, although the facilities helped me do some useful work. However, let me share some of the work that I was able to do. The following are a couple of concepts which I was able to elaborate while at the GRF.

Empowerment

Since Gandhi was a man of action who played a seminal role in contributing to Indian Independence, in that sense for many in the post-independence era, he was supposed to have empowered us or enabled us to get rid of repression, domination, and particularly inhibitions. But this element of our moral-political vocabulary cannot be called Gandhian. While empowerment does talk about distinguishing between the powerful and the powerless, its principle focus is on replacement, assertion, hegemony and consolidation, which are essentially elitist and coercive attributes.

Post-Gandhi, Gandhians have started using this term quite liberally. Gandhi did help us empower ourselves. But this empowerment or enabling and the moral-political vocabulary it seems to enjoin is not Gandhian, neither in form nor in spirit. While power and empowerment talk about the powerful and the powerless, of 'me' and the 'other', of replacement, assertion, hegemony and consolidation, the concepts, nevertheless, remain self-centered in their ethos, and ignorant of self-restraint and non-attachment. For Gandhi 'the other' is not external, it is within. And therefore he talks of ahimsa, moral self-rule, self-reliance, self-restraint, and swaraj. For Gandhi action is yagna, a sacred duty. And this sacred duty consists of exerting oneself for the benefit of 'others', that is, through service. Thus, for him "Swaraj has to be experienced by each one for himself". While self-rule is not just self-government, the central point of Gandhian thinking is an emphasis on self-rule as self-transcendence, which must be "realized in this world". Empowerment, on the other hand, can easily degenerate into self-centeredness and self-indulgence. Above all, for Gandhi, "the world crushes the dust under the feet, but the seeker after truth should so humble himself that even the dust could crush him." In effect this discourse of empowerment is for Gandhi a non-starter.

The notion of power is based on authenticity and conviction. In this sense Gandhi derived his power from his conviction about the authenticity of *ahimsa* and truth. Whether it was *swaraj, sarvodaya* or *satyagraha,* each one of these notions was intended to enable and ennoble the adherents. The radical shift in Gandhi is that, while power in the normal parlance seeks to covet and control, for him power is to, "enjoy the things of the earth by renouncing them". "If we could erase the 'I's' and the 'Mine's' from religion, politics, economics, etc., we shall soon be free and bring heaven upon earth", he claimed. In effect, he was suggesting that the basis of power is both flawed and unsustainable, particularly because via ownership power coercively mediates between the personal and the social. Behind this was his conviction that all the resources of the earth belong to God alone. Thus for him, "begin with a charter of Duties of Man and I promise the rights will follow as spring follows winter".

Ahimsa

Ahimsa for Gandhi is not mere non-killing. It is ethical, moral and *moksha*-inspiring. Since it is an attribute of the soul and every soul is indispensable, *ahimsa* as a social concern cannot accept the greatest good of the greatest number as a standpoint. It insists on the good of all. "Complete non-violence is complete absence of ill-will against all that lives". Thus it is good will towards all. For Gandhi, "*Ahimsa* means the largest love, the greatest charity. If I am a follower of *ahimsa*, I must love my enemy. I must apply the same rule to the wrong-doer who is my enemy or a stranger to me, as I would to my wrong-doing father or son". "*Ahimsa* is a two-way process. While what I think is good for me, I think the same is also good for you. Simultaneously I accept that what you think is good for you, is good for me too." This anticipating the other as non-antagonistic is integral to and a promise of satyagraha.

Ahimsa is a social ethos characterizing personal and social relationships. For Gandhi it is "the law of one's being" and a reflection of the individual's hope and will to tread the path of *satya*: "to see the universal and all-pervading Spirit of Truth face to face one must be able to love the meanest of creation as oneself" is to engage with *ahimsa*. For him it is the pause between *satya* as freedom and *agraha* as insistence. *Ahimsa* is the law of one's being and the individual's hope to tread the path of *satya*. However, the interface between freedom and insisting on it can be very stressful. For Gandhi *ahimsa* is the means, while *satya* is the end. Therefore for him, "to see the universal and all-pervading spirit of Truth face to face one must be able to love the meanest of creation as oneself". Gandhi's appeal to ahimsa was ultimately an appeal to the conscience and reason of the individual, an affirmation of purity of means in the pursuit of any social or political goal. *Ahimsa* enjoins giving scope to compassion and dispassion. This requires *krodha-tyaag* or renunciation of anger, an offspring of passion and possession. It is not a non-response, in that it does not encourage avoidance. It is a cultivated quality of the conscience and a product of such a person's constant dialogue with personal likes and dislikes. It leads to *satya* while simultaneously encouraging critical analysis of trust and transparency. But dispassion by itself begs the question. It is only half the decision. The

other is dedicated commitment to aspire to something. Gandhi sought equanimity and self-control through *krodha-tyaag*. Controlling and managing anger are not the same as renouncing anger. While controlling or managing anger seeks to restrict responses to gain necessary competences, the objective is to replace the sources of anger, the other and not necessarily the reasons why such sources create anger. Gandhi's *ahimsa* stresses renouncing. As such there is no other.

Obviously the first question is what Gandhi expected from *ahimsa*. *Ahimsa* reveals but does not eliminate ignorance; that is a task only *satya* can accomplish. *Ahimsa* focuses on the contradictions behind conflicts within society. Contradictions indicate the homing quality of conflicts, and *ahimsa*, by returning back to the individual, indicates sustainable solutions. This is the abiding distinctiveness of *ahimsa* linking the individual to morality. Illustrating this are Gandhi's experiments, accepting the necessity of politics and not accepting the paramountcy of any one religion.

Ahimsa is a cognitive course which creates a certain well-being by cautioning and reminding us of the coercive qualities of possessiveness. *Ahimsa* indicates and encourages reflective and voluntary practices to help us set up meaningful rules of conduct to help us transform ourselves towards more propitious ways. It, thus, becomes an aid to morality which helps us distinguish and understand processes of how discernment and reflection help us go beyond the instinctive nature-ordained parameter of himsa. *Ahimsa* evolves through discussions, experiments and commitment. With Gandhi it started with goodwill and friendliness, incorporated fearlessness, abstention from harming others, and consolidated as an attitude of non-enmity towards all. Effectively it meant absence of malice and hostility and a total abjuring of violence. As agency it necessitates non-separation from the victim because most violence in society is systemic and therefore intentional. As such, the use of violence necessarily involved strong passions, especially anger and hatred, and disturbed the equanimity and moral harmony of the agent. For yet others, it corrupted his consciousness, defiled his soul and hindered his spiritual progress. Thus for Gandhi, nonviolence is not a cloistered virtue to be practised by the individual for his peace and final salvation, but a rule of conduct for society if it is to live consistently with human dignity.

- Samir Banerjee, Bangalore

प्रवेश सूचना

पीजी डिप्लोमा इन सस्टैनेबल रूरल रिकंस्ट्रक्शन अभ्यासक्रम में प्रवेश

बा-बापू१५०
१८६९-२०१९

PGD IN SRR (Post Graduate Diploma In Sustainable Rural Reconstruction)

शाश्वत ग्रामीण पुनर्निर्माण में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन संचालित उपरोक्त एक साल का निवासीय अभ्यासक्रम के लिए प्रवेश प्रक्रिया जारी है। ग्राम विकास व नेतृत्व विकास के संदर्भ में रुची रखनेवाले स्नातक तथा अनुस्नातक कक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थी अपना प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं। कथित अभ्यासक्रम के लिए छात्रवृति तथा मानधन की व्यवस्था की गई है।

विशेषताएं

- सामुदायिक पुनर्निर्माण विषयक एक साल का निवासी कार्यक्रम
- लोक संस्था निर्माण आधारित क्रियात्मक क्षेत्र कार्य
- क्रिया आधारित शिक्षा - नियोजन तथा कार्यान्वयन (Learning by Doing)
- पूर्ण छात्रवृत्ति का प्रावधान
- गाँधी तीर्थ परिसर में निवास तथा भोजन व्यवस्था
- इंटर्नशिप के दौरान मानधन
- सफलतापूर्वक अभ्यासक्रम करनेवाले छात्रों के लिए निश्चित कार्य नियुक्ति
- भारत के विभिन्न राज्यों से ३० छात्रों का ही चयन किया जाएगा
- शिक्षा का माध्यम - हिंदी और अंग्रेजी

१५ जुलाई, २०२० से प्रारंभ होनेवाले इस पाठ्यक्रम के लिए प्रवेश प्रक्रिया जारी है।

QR CODE

विस्तृत जानकारी के लिए मुलाकात करें।
ONLINE APPLICATION URL LINK & QR CODE
http://www.gandhifoundation.net/GRF_post_graduate_diploma.htm

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन
गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पो. बॉ. ११८, जलगाँव - ४२५००१.महाराष्ट्र.
दूरध्वनी क्र. ०२५७-२२६४८०३, ०९४०४९५५२७२; ई-मेल: info@gandhifoundation.net वेबसाईट: http://www.gandhifoundation.net

गाँधी: आत्मशक्ति की प्रकाश किरण

सत्याग्रह यह केवल बदला लेने की भावना के साथ जुड़ा हुआ तत्व नहीं है, यह तो बदलाव के साथ जुड़ा हुआ तत्व है। और यह बदलाव का आरंभ प्रयोग करने वाले व्यक्ति से होता है। गाँधी का सत्याग्रह व्यक्ति के समग्र विकास की धारा को असर करता है। इसलिए यह आज से करीब एक शतक पहले जितना प्रासंगिक था उतना ही आज भी है। इस प्रभाव की असर विश्व में फैली हुई है इसे देख सकते हैं और महसूस भी कर सकते हैं। ज्योर्ज बर्नार्ड शॉ ने ठीक ही कहा था, गाँधीजी का प्रभाव? आप हिमालय के कुछ प्रभावों के बारे में पूछ सकते हैं। ऐसा ही एक प्रभाव व प्रेरणा की गाथा को कार्ल हीथ ने अनुभव किया है। उस विचार को यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

– संपादक

मानवता के इतिहास में अवतारी पुरुष को सदा दुर्धर्ष संघर्ष का सामना करना होता है। किसी की उक्ति है, प्रकाश की भाँति मैं जग में आया हूँ। किंतु प्रकाश–पुत्रों को यह जगत् स्वागत नहीं देता, क्योंकि लोगों को प्रकाश से अधिक अंधकार प्रिय होता है। अविद्या, मिथ्या धारणा और उदासीनता को लोग अपना रक्षक तक समझ लेते हैं। अवतारी पुरुष को तो इन्हें छिन्न–भिन्न करके, उनसे ऊपर उठना पड़ता है।

गाँधीजी के चरित्र की यह आजीवन विशेषता रही है, कि उन्होंने सदा अंधकार को छिन्न–भिन्न किया और अविद्या और मिथ्या धारणा पर विजय पाई। यही कारण है कि आज वह केवल भारत–प्राण होकर ही नहीं, बल्कि सारी सहृदय मानवता के प्रेरक होकर दीप्तिमान हो रहे हैं। न जाने उन्होंने कितने दु:ख झेले, कितनी साधना की, कितनी कठिन उपासना की और कितने उपवासों से अपने शरीर को सुखाया है। यदि ऐसा न करते तो वह इतना ऊँचा न उठ पाते।

जीवनभर इस अंधकार को छिन्न–भिन्न करके बढ़ते रहना और अज्ञान और दुराग्रह से कभी न हारना, बल्कि सदा उसे परास्त करते रहना–गाँधी के चरित्र की विशेषता रही है। यही वजह है कि आज दिन हिंदुस्तान की सर्वश्रेष्ठ आत्मा और प्रतिभा के रूप में ही उनकी दीप्ति फैली हुई नहीं है, बल्कि तमाम सहृदय मानवता के स्फूर्तिदाता ही आज वह हैं। जीवन उनका सतत साधना, तपस्या, आर्त–कातर प्रार्थना और अनेक उपवासों का लंबा इतिहास है। ऐसा न होता तो वह इतने महान नहीं हो सकते थे।

बहुत पहले ही मोहनदास करमचंद गाँधी ने धीरता के परम रहस्य को पा लिया था। थॉमस ए. कैंपिस ने कहा है, ''अपार धैर्य में तू शांति प्राप्त कर।'' गाँधी ने सचमुच ही उस कथन की सचाई को अपने भीतर अनुभूत किया है। जो गाँधीजी के जीवन का अध्ययन करेंगे, उनके सार्वजनिक कृत्यों और संबंधों को बारी की से देखेंगे, वे यह अनुभव किए बिना नहीं रह सकेंगे कि चाहे दूसरों के प्रवेश या जोश को देखकर उनके खून का दबाव बढ़कर खतरनाक हो जाए पर उनका सहज धैर्य भंग नहीं हो सकता। उनका धैर्य न तो विरोधियों या विदेशी सरकार के सामने ही छूटता है, न अनगिनत दर्शनार्थियों के सामने और न अपने चेलों के सामने ही; यद्यपि वे उन्हें प्राय: तंग किया करते हैं। सबके प्रति–धीरज उनका अखंडित रहता है। यह अनंत धैर्य–धन उनका स्वत्व है, और दारुण–से–दारुण घटना या जघन्य–से–जघन्य अपराध भी उनके धीर भाव को विचलित नहीं कर सकता। इसका कारण कदाचित यह हो कि भीतर आत्मा में उनकी अखंड निष्ठा है कि ''भगवान के काम धीरे–धीरे होते हैं।'' मो. क. गाँधी भगवान का ही काम कर रहे हैं।

वे सत्य के अनन्योपासक हैं। वह कभी गलतियाँ न करने का ढोंग नहीं रचते और जब–जब भूल उनसे हो गई है, अनुपम साहस के साथ उसे उन्होंने स्वीकार किया है और सर्वसाधारण के आगे उसका प्रायश्चित्त किया है। तीन वर्ष हुए, उन्होंने लिखा था, ''अब तो मेरे ईश्वर का एक ही नाम है और बखान है। वह है सत्य! उससे अधिक संपूर्णता के साथ मेरे सत्य–रूप ईश्वर का वर्णन नहीं हो सकता।'' ध्यान रहे कि इस ईश–धर्म में वह काल्पनिक सचाईयों की दुनिया में नहीं जा रमते है; बल्कि इस भाँति उनकी कर्मनिष्ठा ही बढ़ती है। ''ऐसे धर्म के सच्चे अनुयायी रहने में व्यक्ति को जीव–मात्र की सतत सेवा में अपने को खो देना होता है।'' और यह सेवा ऊपर से की जानेवाली दया–दान की सेवा नहीं है।''यह तो अपनी क्षुद्र बूँद को जीवन के अपार महासागर में पूरी तरह डुबोकर एकाकार कर देना है।'' ''जीवन

के सब विभाग उस सेवा में समा जाने चाहिए।'' इस तरह सत्य उनके लिए एक जीवंत तथ्य है।

और इसी से गाँधीजी में जीवन की अखंडता और संपूर्णता दिखलाई पड़ती है। अपने को जनसाधारण से बड़ा समझकर, उनसे अलग रहनेवाले आध्यात्मवादी वह कदापि नहीं। यदि वह महात्मा या महान आत्मा हैं, तो जनता के बीच वह उसी के आदमी हैं। दृष्टि–स्पष्ट, ईश्वर के समक्ष मौन–मग्न, सच्चे अर्थ में विनय–नम्र। ऐसा यह प्रार्थना, अध्यात्म और ईश–लगन का पुरुष एक ही साथ शरीर के काम में भी अथक और चुस्त है। सबके प्रति सुलभ, अतिशय स्नेही और अत्यंत विनोदी। वह व्यक्ति मानव संघर्ष के निकट घमासान में भी जितना नैतिक और धार्मिक है उतना ही सामाजिक और राजनैतिक भी है।

कभी वह रहस्य की भाँति दुरधिगम्य होते हुए भी अपनी आत्मा की सरलता और विमलता के कारण सबके स्नेह–भोजन भी हैं। फिर अपने अंदर का मैल तो उन्होंने कोने–कोने से धो डाला है। मैल नहीं तो बाहरी परिग्रह भी उनके पास नहीं ही जितना है। इससे उनके अपने या अन्य देशों के स्त्री–पुरुष बड़ी संख्या में दूर–दूर से खिंचकर उनके पास पहुँचते हैं। स्वत्व के नाम सब उन्होंने तज दिया है। थोरो की भाँति वह कुछ न रखकर भी सब पा जाने का आनंद उठाते हैं। और समूची जीव–सृष्टी की सेवा के अर्थ सत्य–शोध में अपने को गला देनेवाले वह गाँधी लाखों स्त्री–पुरुषों के आश्वासन और आकांक्षा के केंद्र – पुरुष बन गए हैं।

दक्षिण अफ्रिका में अपने राष्ट्रवासियों के हक में उनके युद्ध को याद किजीए। उनकी अपनी हिंदू–जाति के अछूतों–हरिजनों–के अर्थ किए उनके आंदोलन का स्मरण किजिए, भारतवासियों और उनकी स्वतंत्रता के लिए किए गए प्रयत्नों को देखिए; दीन, दरिद्र और अनपढ़ छितरे–छाए हिंदुस्तान के गाँवों को देखिए; सरहद के पठानों और कबीलेवालों को देखिए; मुस्लिम–हिंदू ऐक्य या राजबंदियों के छुटकारे की बात लीजिए; सब वर्गों, जातियों, संप्रदायों और धर्मों के स्त्री–पुरुषों को देखिए; गोरक्षा की भावना से व्यक्त होनेवाले पशु–जगत् को लीजिए–गाँधी का कर्म सब जगह व्याप्त दिखेगा। और बुराई के प्रति अहिंसात्मक प्रतिरोध की शिक्षा उनकी जीवित और अमर सूझ है। अपने समूचे और विविध लौकिक कर्म के बीच उस व्यक्ति ने किसी के प्रति असद्भावना को प्रश्न नहीं दिया। सदा विकार पर विजय पाई और इस भाँति भारत के और मानवता के एक विनम्र सेवक कहलाने का गौरवपूर्ण अधिकार पाया।

सत्याग्रह के सिद्धांत को ऐसी अविचल निष्ठा के साथ उन्होंने पकड़े रखा, यह योग्य ही है क्योंकि वह स्वयं आत्म–शक्ति के अवतार हैं। अपनी सब सामाजिक और राजनैतिक प्रवृत्तियों से परे वह प्रकृत भाव में सदा आध्यात्मिक पुरुष ही रहे हैं। अत: आधुनिक युग के लिए उनकी वाणी चुनौती की वाणी बन गई है, यही उनका सर्वोत्तम गुण है। इसी में उनकी अवतारता सिद्ध है। जेल में रहकर, त्रस्त होकर, उपेक्षा, अपमान और उपहास से शिकार बनकर भी वह मानवता की माप में हर पग पर ऊँचे–ही–ऊँचे चढ़ते गए।

मनुष्यों तथा अन्य जीवनधारियों के प्रति उनकी मानवोचित सह्रदयता के कारण इस धरती पर हर देश और हर जगह उन्हें अनेक स्नेही बंधु प्राप्त हुए हैं। उनके मन में हिंदू और मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, पारसी, यहूदी धर्मों के लोगों के बीच कोई भेद–भाव नहीं है। सब उनके मित्र हैं और सत्य के इस अनंत परिवार के अंग हैं, और सत्य ही ईश्वर है। मनुष्य अथवा मनुष्येतर, अर्थात् प्राणिमात्र के प्रति अहिंसा की भावना उनके जीवन में ओतप्रोत हैं। इस युग में सभ्य और परिपूर्ण मानवता का उन्हें नमूना समझिए।

– कार्ल हीथ, लंदन,
'गाँधी अभिनंदन–ग्रंथ' से साभार

गाँधीजी का राजनेतृत्व

गाँधीजी राजनैतिक इतिहास में अद्वितीय व्यक्ति हैं। उन्होंने पीड़ित लोगों के स्वातंत्र्य–संघर्ष के लिए एक बिलकुल नई और मानवोचित प्रणाली का आविष्कार किया है और उस पर भारी यत्न और तत्परता से अमल भी किया है। उन्होंने सभ्य संसार में विचारवान लोगों पर जो नैतिक प्रभाव डाला है उसके पाशविक बल की अतिशयोक्ति से पूर्ण वर्तमान युग में बहुत अधिक स्थायी रहने की संभावना है, क्योंकि किसी भी देश के राजनीतिज्ञ अपने व्यावहारिक जीवन और अपनी शिक्षा के प्रभाव से जिस हद तक अपने देशवासियों के नैतिक बल को जागृत और संगठित कर सकेंगे, उसी हद तक उनका काम चिरस्थायी रह सकेगा। हम बड़े भाग्यशाली हैं और हमें कृतज्ञ होना चाहिए कि ईश्वर ने हमें ऐसा प्रकाशमान समकालीन पुरुष दिया है – वह भावी पीढ़ियों के लिए भी प्रकाश – स्तंभ का काम देगा।

– अलबर्ट आइन्स्टाइन

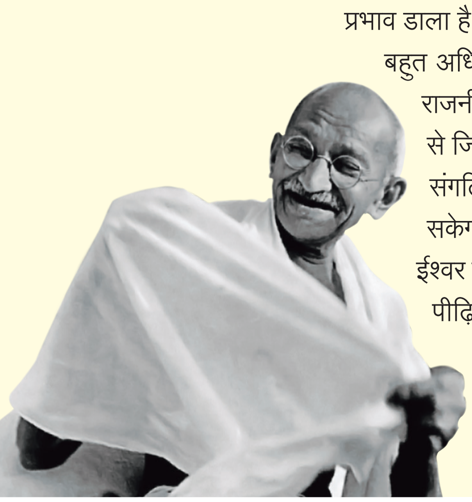

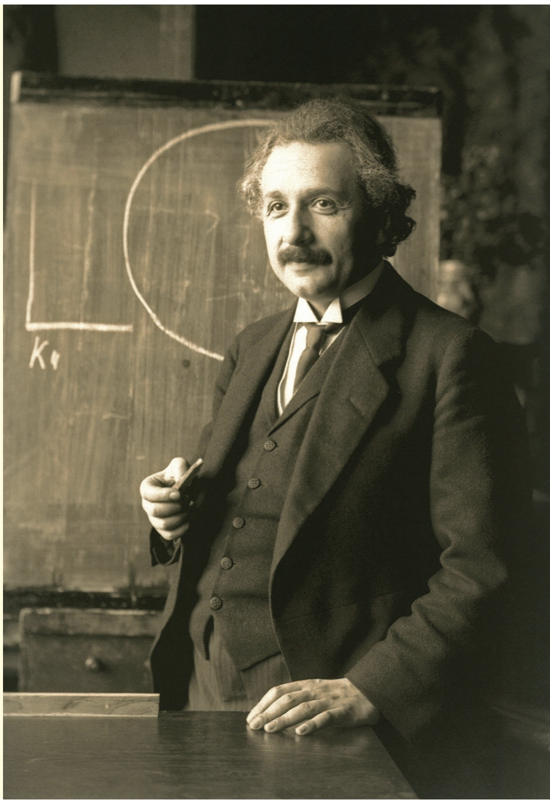

गाँधी तीर्थ से...

खोज या प्रयोग का पहलू हुआ नजरंदाज

जयपुर फुट संस्था के व्यवस्थापक के रूप में विख्यात डॉ. डी. आर. मेहता का जन्म २५ जून १९३७ को राजस्थान के जोधपुर जिले में हुआ था। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से स्नातक और लंदन से लोक प्रशासन विषय में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। आपका चयन १९६१ में भारतीय प्रशासनिक सेवा में हुआ। अवकाश प्राप्त करने के बाद आपने १९७५ में 'भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति' की स्थापना की और विकलांगों की सेवा में खुद को समर्पित कर दिया। आपके इस प्रयास की सराहना करते हुए कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने आपको सम्मानित किया।

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक के रूप में आप आरंभ से ही अपनी भूमिका अदा कर हैं। गाँधी विचार के प्रति आपका नजरिया एक नए दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। गाँधी तीर्थ के उद्घाटन के दौरान आपके द्वारा लिखा यह लेख हमारे पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।

–संपादक

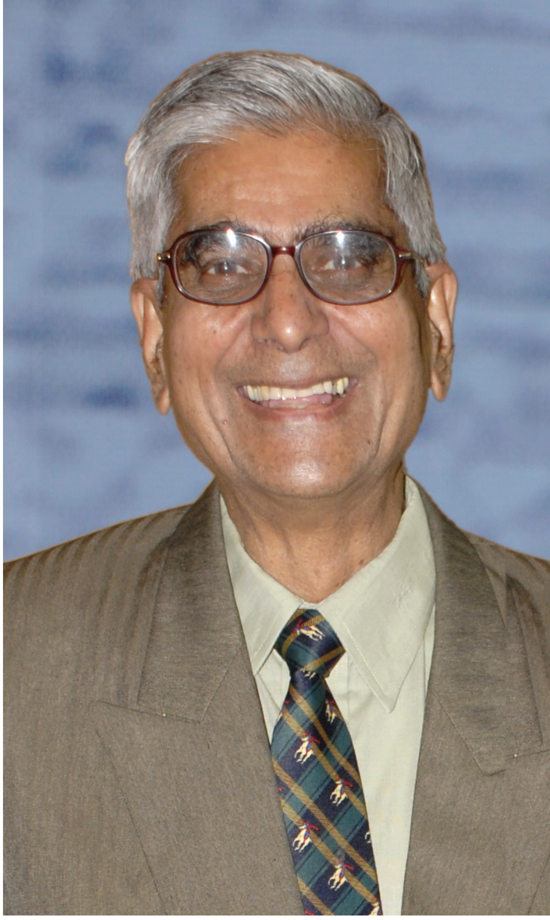

डॉ. डी. आर. मेहता

गाँधीजी हमेशा खोज में लगे रहते थे। प्रयोग करते रहते थे। अपनी आत्मकथा का शीर्षक भी उन्होंने सत्य के प्रयोग– रखा। सत्याग्रह का विचार और क्रियान्वयन, जिसमें उन्होंने कई बार परिवर्तन किए, यह उनके प्रयोगात्मक या खोजी मानस का ही परिणाम था। दक्षिण अफ्रीका के शुरुआती आंदोलन से भारत में स्वतंत्रता संग्राम के अलग–अलग पहलुओं का विश्लेषण करें तो यह स्पष्ट दिखाई देता है कि वह परिस्थितियों का गहराई से अध्ययन कर, आंदोलन का कार्यक्रम निश्चित कर, सफलता या असफलता के आधार पर अगले कार्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन करते थे।

परंतु गाँधीजी के जाने के बाद उनके खोज या प्रयोग का यह पहलू, उनके अनुयायियों ने नजरंदाज कर दिया। गाँधीजी के हर शब्द को उनके कुछ अनुयायियों ने वेद वाक्य मान लिया। इससे गाँधीवाद में बहुत कुछ ठहराव आ गया।

उदाहरण के लिए खादी पर विचार करें। गाँधीजी खादी द्वारा बेरोजगारी की समस्या का समाधान करना चाहते थे। वे यह भी चाहते थे कि खादी गरीब का पहनावा बने। यह बहुत ही आवश्यक या सुंदर भाव था। यह गाँधीजी की तह तक जाने के प्रयास का फल था। पर आज खादी संस्थाओं की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहीं है। अधिकतर संस्थाएं घाटे में हैं। खादी का कपड़ा मँहगा भी हो गया है। इसे कातने–बुनने वाले को कम मजदूरी मिलती है। इसे बहुत कम लोग पहनते हैं। युवा पीढ़ी तो शायद ही खादी का प्रयोग करती हैं। खादी के मूल विचार को अक्षुण्य रखते हुए खादी को वापस कैसे प्रोत्साहित किया जाए? गाँधीवाद में सामान्यतः विश्वास रखने वाले इस पर सोचते ही नहीं। कुछ लोगों ने सोचा। अंबर चरखा आया। पोलिस्टर खादी आई। कुछ अन्य प्रयोग हुए। पर इन पर पूर्ण सहमति नहीं बन पाई।

यदि गाँधीजी आज होते तो उनका क्या मत होता और वह क्या परिवर्तन करते? वे निश्चित रूप से आज के विज्ञान को खादी से जोड़ते। आज के जो प्रबंधन या विक्रय के सिद्धांत हैं, उन पर भी सोचते और जनहित में यथा सम्भव उनका उपयोग करते। सौर ऊर्जा का भी प्रयोग करते। शायद खादी के उत्पादन और वितरण की व्यवस्था, अवश्य मूल भाव से खंडित किए बिना परिवर्तन होता।

दूसरा उदाहरण सत्याग्रह का लें। सत्याग्रह एक नैतिक प्रणाली है। इसका आधार है सत्य। जब भी उनको लगा कि सत्याग्रह सत्य के साथ नहीं है तो उन्होंने सत्याग्रह बंद कर दिया। पर आज कई बार सत्याग्रह का स्थान दुराग्रह ने ले लिया है। अपनी गलत माँगों को भी मनवाने के लिए संख्या के आधार पर आंदोलन चलाये जाते हैं और उन्हें सत्याग्रह कहा जाता है।

गाँधीजी यदि आज होते तो इस प्रकार के आंदोलनों का अनुमोदन वे नहीं करते। उनका प्रयास यह होता कि आंदोलन में आध्यात्मिकता का अंश आए। गाँधीजी दरिद्र नारायण की बात करते थे। वही उनका केन्द्र बिन्दु था। गरीबी मिटाने के लिए उनके कुछ प्रयोग थे। वे विकेन्द्रिकरण चाहते थे। ग्राम संस्थाओं को सशक्त बनाना चाहते थे। उन्हीं के विचारों का सम्मान करते हुए भारतीय संविधान में भी इस पर बल दिया गया। सन १९९३ में ग्राम संस्थाओं को और सशक्त बनाने के लिए भारतीय संविधान में संशोधन भी किया गया। पर आज कई ग्राम संस्थाएं अच्छा कार्य नहीं कर रही है। आर्थिक अनियमितताएं, जातिवाद, संकीर्णता आदि बिन्दु उठाये जाते हैं। आज अगर गाँधीजी होते तो वे सिर्फ आकृति से ही संतुष्ठ नहीं होते, अपितु उनको फल से आंकते। वे उन्हें शुद्ध और जीवंत बनाते।

सारांश यह है कि गाँधीजी के सिद्धांतों के क्रियान्वयन में जो ठहराव व खिसकाव आया है, उसको चलायमान बनाने का एक तरीका है, उन पर चिंतन और प्रयोग।

सेवा और साहस का दीप स्तंभ: गाँधी तीर्थ

सौम्यता और नम्रता की प्रतिमूर्ति दलीचंद ओसवाल का जन्म २० अगस्त १९३२ को जलगाँव जिले के एक छोटे से गाँव वाकोद में हुआ था। इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त करने के बाद मुंबई में मैकेनिकल इंजीनियर के रूप में कार्य किया। १९६६ में त्याग पत्र देकर जैन ट्रेडिंग का व्यवसाय संभाला। जैन उद्योग समूह के विकास में अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान की। १५ फरवरी १९९८ में सहकारी बैंक की स्थापना की। आप वर्तमान समय में भी धार्मिक-सामाजिक क्षेत्रों के अनेक संगठनों के महत्वपूर्ण पदों पर रह कर समाज सेवा का कार्य कर रहे हैं। इस कारण विभिन्न संस्थाओं ने आपको समाज शिरोमणि, अजातशत्रु, सेवादास जैसे अनेक अलंकरणों से सुशोभित किया है।

''खुद को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है कि आप दूसरों की सेवा में खुद को खो दें।'' गाँधीजी का यह विचार आपका जीवन-मंत्र बन गया है। आप फाउण्डेशन की युवा टीम के लिए अमोध प्रेरणा के स्रोत है। आप गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के संचालक के रूप में यहाँ कार्यरत कल्याणकारी कार्यों में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं। गाँधीजी के प्रति आपके विचार इस लेख के माध्यम से हमारे पाठकों के साथ साझा कर रहे हैं।

-संपादक

दलीचंद ओसवाल

देश को स्वतंत्रता मिले ६४ साल हो गए। मुझे लगता है कि हम गाँधी के विचारों को भूलते जा रहे हैं। उसका कारण २०वीं से २१वीं सदी आने के बाद जिस तरह से सूचना तकनीक, दूरदर्शन, मोबाइल, इंटरनेट, फेसबुक में अपनी शक्ति लगा कर हम स्वयं केन्द्रित संस्कृति बना रहे हैं। इससे हम अपने संस्कार और संस्कृति भूलते जा रहे हैं। संयुक्त पारिवारिक संस्कृति को नजरंदाज कर एकल परिवार में आ रहे हैं। संयुक्त परिवार में अपनत्व था, सहयोग देकर एक-दूसरे को ऊँचा उठाने में लोग अपना पुरुषार्थ समझते थे। यह सब धीरे-धीरे लुप्त होता जा रहा है। इस वजह से राष्ट्रपिता और उनकी दी हुई बुनियादी तालीम को हम भूलते जा रहे हैं। इससे समाज में घृणा, रोष, क्रोध आदि समस्याएं बढ़ रही हैं। जिससे पूरा देश और उसके नागरिक अशांत, तनावग्रस्त हो रहे हैं। गाँधीजी की जीवन जीने की पद्धति, महावीर के बताये हुए अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह और अनेकांत तत्वों पर खड़ी हुई थी। निःस्वार्थ सेवाओं का चलन था। अब स्वार्थ के साथ-साथ अभिमान के वशीभूत होकर लोग केवल पैसे के ही पीछे भागते हैं। जीवन के हर क्षेत्र में फैला भ्रष्टाचार उसी का परिणाम है।

डॉ. भवरलाल जैन बचपन से ही भगवान महावीर और गाँधीजी के विचारों से प्रभावित है। अपनी जीवन पद्धति भी उन्होंने इन्हीं उसूलों पर खड़ी की है। जिसका दृढ़ता से खुद आचरण करते हैं और जो लोग उनके संपर्क में आते हैं, उनसे प्रेमपूर्वक आचरण करवाते हैं। उनके जीवन का मूलमंत्र 'कार्य ही पूजा है'। प्रामाणिकता से जो भी व्यवसाय हमें मिला, या हमने किया। उसको करके जो भी अर्थ प्राप्त किया वह केवल हमारा या हमारे परिवार का नहीं, बल्कि पूर्ण समाज और राष्ट्र का है। वे अपने अगल-बगल यहाँ जहाँ कहीं पहुँचते हैं, वहाँ देशवासियों की मानसिकता, व्यवहारिकता और स्वार्थपूरिता देखते हैं। तब वे महावीर, गाँधी और उनके अमोघ तत्वों को याद करते हैं। चिंतनशील और संवेदनशील होने के कारण, उन्होंने अपने जीवन की शुरुआत से ही यह अपना ध्येय निश्चय कर रखा था, जो भी मैं कर पाऊँगा, वह गाँधी और महावीर के विचारों के अनुकूल होगा। इन्हीं विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने गाँधी तीर्थ की संकल्पना बड़े सोच-समझकर की है। जिससे गाँधीजी के जीवन और रचनात्मक कार्यों को अपनाकर शांति अमन चैन के साथ कठोर परिश्रम, प्रामाणिकता, निर्व्यसनता, शाकाहार, सदाचार आदि गुणों को अपने जीवन में उतारकर सही में गाँधीजी जैसे अपरिग्रही, संतोषी, संयमी, अनुशासित जीवन पद्धति अपना कर हमारे उन तत्वों को दुनिया के सामने अपने आचरण में रखकर जन्म के उद्देश्यों को पूरा करें। भावी पीढ़ी को सत्य और अहिंसा की प्रेरणा देने के लिए मात्र १६ महीने में ही इस स्मारक का निर्माण करा दिया। व्यक्ति निःस्वार्थ भाव से दुनिया के हर जीव-जंतु की सेवा करते रहें और युवको को साहस की दीप स्तंभ जैसी प्रेरणा इस गाँधी तीर्थ से मिलती रहे।

जैन धर्म जीवन जीने की पद्धति है और उस पद्धति से यदि हम इस मानव देह का उपयोग करें तो आपस में भाईचारा बढ़ेगा, तनाव कम होगा। जैसे आग से आग नहीं बुझती, आग को पानी से बुझाया जाता है। उसी तरह परमाणु बम से शांति कायम नहीं होगी। यह शांति एकादश व्रत के पालन करने से मिलेगी। इसलिए हम सब भारतीयों का परम कर्तव्य है कि हम अपनी ऋषि-कृषि संस्कृति को अपनाकर दुनिया में शांति प्रतिस्थापित करने में अग्रसर बने। महावीर और गाँधी के रास्ते ही हम दुनिया में शांति कायम कर पाएंगे। डॉ. भवरलाल जैन ने इसी विचार से गाँधी तीर्थ बनाया है। हम उनको तथा उनके इस महान कार्य का अभिनंदन करते हैं।

फाउण्डेशन की गतिविधियां

शिविर के उद्घाटन प्रसंग पर (बाएं से) अंबिका जैन, डॉ. भालचंद्र नेमाडे, तुषार गाँधी, राधाबहन भट्ट, डॉ. अनिल काकोडकर, मोराणकर जी तथा शिविरार्थी

श्रम संस्कार शिविर द्वारा बापू को श्रद्धांजलि

श्रम संस्कार शिविर का उद्घाटन करते हुए डॉ. अनिल काकोडकर

जल संरक्षण कार्य का निर्माण

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के द्वारा बा-बापू १५० जयंती वर्ष पर चोपडा तहसील के बोरअजंटी गाँव में जन सहयोग द्वारा वन बाँध का पुनः निर्माण किया गया। इसी के साथ अंबापानी गाँव के पास स्थित तालाब तथा वैजापूर और शेनपानी स्थित तालाब के पुनः निर्माण कार्य को अंजाम दिया गया।

बा-बापू १५० के अंतर्गत फाउण्डेशन द्वारा समग्र विकास की दिशा में आगे बढ़ते हुए चोपड़ा तहसील के कई गाँवों में समुदाय की हर एक इकाई को सक्षम बनाने के लिए त्रिविध कार्यक्रमों को अंजाम दिया जा रहा है।

गाँधी निवार्ण दिन के अंतर्गत फाउण्डेशन द्वारा हर साल ग्रामीण पदयात्रा का आयोजन किया जाता है। इस साल पदयात्रा की जगह विधायक कार्यक्रम आधारित ग्रामीण शिविर का आयोजन किया गया। २५ से ३० जनवरी २०२० तक आयोजित इस शिविर का उद्देश्य जल संरक्षण रहा। ग्रामीण इलाके को पानी के मुद्दे पर स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य से आयोजित इस शिविर में फाउण्डेशन के कार्यकर्ता, पीजी डिप्लोमा के छात्र तथा ग्रामजनों का सहयोग प्राप्त हुआ। शिविर के दौरान बोरअजंटी गाँव में स्थानीय जल प्रवाह पर स्थित बांध मिट्टी से भर गया था। उस वजह से बांध की पानी संग्रह करने की क्षमता कम हो गई थी। इस इलाके में होने वाली बारिश का सारा पानी बहकर चला जाता था। नतीजा यह हुआ कि ग्रीष्म ऋतु में सिचाई के लिए तो पानी रहता ही नहीं हैं, बल्कि पीने के लिए भी काफी दिक्कतें खड़ी होती हैं। ऐसी स्थिति में फाउण्डेशन के पाँच दिवसीय शिविर के द्वारा इस बाँध की गहराई कर पानी संरक्षण करने की क्षमता को बढ़ाया तथा उसमें से निकाली गई मिट्टी को उसी प्रवाह पर स्थित अन्य बाँध की मजबूती के लिए प्रयोग में लाया गया। इसी शिविर का उद्घाटन २५ जनवरी के दिन फाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ. अनिल काकोडकर के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर फाउण्डेशन संचालक तुषार गाँधी, दलीचंद ओसवाल, फाउण्डेशन के सलाहकार वरिष्ठ गाँधीजन राधाबहन भट्ट, डॉ. भालचंद्र नेमाडे, सौ. अंबिका जैन, वन विभाग के जिला अधीक्षक पी. टी. मोराणकर की उपस्थिति में इस परियोजनाओं का उद्घाटन किया गया। इस निवासी शिविर में बोरअजंटी के सरपंच खुमसिंग पाडवी-बारेला, अशोक पाटील, गोरख धनगर, दिपक धनगर, नीतिन कोली, शिवदास कोली सहित ग्रामवासियों ने सहभाग लिया। इस जल संरक्षण योजना के लिए तकनीकी मार्गदर्शन सहित विशेष सहकार्य व परिश्रम जैन इरिगेशन सिस्टम के इंजिनियर पी. ए. पाटील व सर्वेअर टीम ने किया। इस कार्य को सफल बनाने में सागर चौधरी, चंद्रकांत, सुधीर पाटील सहित फाउण्डेशन के सभी सहयोगियों ने अपना योगदान अर्पित किया।

असरः इस कार्य से किसानों को कृषि के लिए आवश्यक पानी प्राप्त होगा, जमीन में जलस्तर की वृद्धि होगी, आसपास के पर्यावरण को समृद्ध बनाने में काफी मदद मिलेगी तथा महिलाओं को दूर-दूर से पीने का पानी लाने की नौबत दूर होगी। सबसे महत्वपूर्ण यह कार्य स्थलांतर रोकने में प्रभावी कदम साबित होगा।

हम मेहनतवालों ने जब भी मिलकर कदम बढ़ाया, सागर ने रास्ता छोड़ा, पर्वत ने शीश झुकाया ...

युवाओं को शर्माए ऐसी है राधाबहन की श्रम के प्रति निष्ठा

शेनपानी गाँव में पिछले साल फाउण्डेशन द्वारा निर्मित तालाब अभी भी पानी से भरा है, और लोगों के चेहरे खुशी से...

तुम्हें नए प्रतिमान सृजन के अपने हाथों से गढ़ना है।

गंगा मां मंडलः एक परिवार के लिए सभी पोषक तत्व, सब्जियां और फलों द्वारा प्राप्त करने के लिए तैयार किया गया यह एक गोल घेरे में बनाया गया ढांचा है। इसमें अधिक जगह की जरूरत भी नहीं पड़ती। इसका उद्देश्य है जैविक सब्जियों के लिए परिवार को स्वावलंबी बनाना ताकी बाजार पर निर्भरता कम हो जाए और परिवार के सदस्यों की पोषण की जरूरत भी प्राप्त हो जाए। गाँव को समग्र रूप से विकास कि दिशा के साथ जोड़ने का मतलब है वहाँ बसे हर एक व्यक्ति को स्वावलंबी बनाना। फाउण्डेशन विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से यह प्रयास कर रहा है। बा–बापू १५० के अंतर्गत की गई यह पहल रंग ला रही है।

फाउण्डेशन जन समुदाय के साथ मिलकर निम्न कार्य की पहल करता है,

१. गाँव के विभिन्न समुदायों को प्रतिष्ठित जीवनशैली के लिए संकलित समूह में रूपांतरित करता है।

२. लोक भागीदारी द्वारा समग्र प्रगति की ओर ले जाना (मेरा गाँव मेरा गर्व – यह भावना हर एक व्यक्ति में निर्माण करता है)

३. ज्ञान, कौशल और उद्योग साहसिकता के बल पर ‘सायबर विलेज’ की संकल्पना को विकसित करता है।

ग्रामीण महिला नेतृत्व विकास में फाउण्डेशन की पहल

बोरअजंटी स्थित सौर ऊर्जा सूत कताई प्रकल्प के उद्घाटन में उपस्थित तुषार गाँधी, राधाबहन भट्ट, डॉ. अनिल काकोडकर तथा दलीचंद ओसवाल

चरखा बन रहा है दूसरी आजादी का प्रतीक – चरखे की पूजा कर इस प्रकल्प का विधिवत आरंभ करते हुए डॉ. अनिल काकोडकर

सौर ऊर्जा आधारित सूत कताई का आरंभ

जलगाँव स्थित फाउण्डेशन के परिसर में खादी रिसर्च तथा डेमो सेंटर में सौर ऊर्जा आधारित सूत कताई विभाग कार्यरत है। उद्देश्य यह है कि अंबर चरखा को सौर ऊर्जा के साथ जोड़कर आजीविका का निर्माण किया जाए। फाउण्डेशन इस विचार में विश्वास करता है कि अगर बदलते स्वरूप के साथ हम उपयुक्त साधनों के स्वरूप में बदलाव कर उन्हें नए अंदाज में प्रस्तुत करते हैं तो वे अपने अस्तित्व के साथ समुदाय का भी अस्तित्व टिकाने में प्रभावी साबित होते हैं। एक महिला अंबर चरखा पर दिन भर कार्य करती है तब उसको पर्याप्त आजीविका भी नहीं मिलती। अगर एक महिला करीब–करीब तीन से अधिक सौर अंबर चरखा चलाती है तब वह अपना जीवन निर्वाह चला सकती है। फाउण्डेशन ने अंबर चरखे को सौर ऊर्जा के साथ जोड़कर महिलाओं के लिए आजीविका के द्वारा खोल दिए हैं। अब एक महिला कम मेहनत से तीन से चार अंबर चरखे का संचालन करती हैं, वह भी स्मार्ट तरीके से।

बोरअजंटी गाँव की दस महिलाओं ने फाउण्डेशन के सहयोग से सौर ऊर्जा आधारित सूत कताई उद्योग का आरंभ किया है। फाउण्डेशन की ओर से इस गुट को तकनीकी सहयोग तथा प्रेरणा प्रदान की जा रही है तथा उत्पन्न होने वाला सूत भी खरीदा जा रहा है। बोरअजंटी गाँव की महिलाएं आत्मसम्मान के साथ अपनी आजीविका प्राप्त कर रही हैं और बदलते स्वरूप के साथ खुद को भी बदल रही हैं। यही तो गाँधी विचार है। इस गुट की प्रमुख इंदुबाई जगन बारेला ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि फाउण्डेशन के माध्यम से उन्हें शाश्वत आजीविका का मार्ग प्राप्त हुआ है। बोरअजंटी गाँव में २५ जनवरी के दिन आरंभ किया गया इस सौर ऊर्जा आधारित अंबर चरखे इकाई का उद्घाटन कार्य डॉ. अनिल काकोडकर के करकमलों द्वारा किया गया।

पिछले दो सालों से फाउण्डेशन के प्रयास से चोपड़ा तहसील के कई गाँवों में विभिन्न प्रकार के कार्यों से लोगों को शाश्वत जीवनशैली की दिशा में सामूहिक रूप से प्रयास किया जा रहा है। उनमें जल संरक्षण कार्यक्रम, वैजापूर गाँव में वाडी परियोजना के अंतर्गत किचन गार्डन, केंचुआ खाद्य उत्पादन, गंगा मां मॉडेल, बीज बैंक, मशरूम उत्पादन इकाई जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से विभिन्न महिला बचत गुटों को सक्रिय रूप से जोड़ा गया है। गाँव को समग्र विकास की दिशा में आगे बढ़ाते हुए इन सभी कार्यों को फाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ. अनिल काकोडकर, संचालक तुषार गाँधी, दलीचंद ओसवाल, भालचंद्र नेमाडे, राधाबहन भट्ट ने मुलाकात कर लोगों को तथा कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित किया। फाउण्डेशन द्वारा कार्यान्वित बा–बापू १५० के अंतर्गत गाँधी विचार के जरिए गाँवों को सक्षम बनाने के प्रयास में आइए हम सब साथ मिलकर प्रयास करें। गाँव के अस्तित्व में ही हमारा अस्तित्व समाया हुआ है। साथ मिलकर इसे शाश्वत विकास की बागडोर में बाँधने का प्रयास करें।

बोरअजंटी वस्त्र स्वावलंबन की दिशा में, सौर ऊर्जा आधारित चरखा उद्योग का उद्घाटन

ग्रामीण युवा की आवाज

''मेरा नाम प्रेमसिंग बारेला (वैजापूर) है और मैं एक स्नातक हूँ। मुझे भी लगता था मैं भी अपने दोस्तों कि तरह पढ़ाई के बाद शहर में जाकर नौकरी करूं, मैं ऐसा कर सकता था। किंतु गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के कार्यकर्ता ने विभिन्न कार्यक्रम के बारे में बताया, मुझे अच्छा लगा। मैं अपनी जगह पर रहकर निरंतर आजीविका प्राप्त करता रहूँ और शहर में जितनी कमाई होती है उतनी कमाई मैं अपने गाँव में रहकर करूं यही मेरा लक्ष्य है। पिछले एक साल से मैं वाडी प्रकल्प, केंचुआ खाद्य व जल संरक्षण के कार्य द्वारा अपनी आजीविका को मजबूत कर रहा हूँ। मुझे यकीन है कि मैं मेरे गाँव का परिचय बनूंगा।''

युवाओं के हौसले को प्रोत्साहित करते डॉ. अनिल काकोडकर तथा तुषार गाँधी

कार्यकर्ता की आवाज

''मेरा नाम सागर चौधरी है, मैंने समाजकार्य स्नातकोत्तर तथा फाउण्डेशन से पीजी डिप्लोमा का अभ्यास किया है। अभी मैं बा–बापू १५० के अंतर्गत ग्रामीण भाग में कार्य करता हूँ। फाउण्डेशन से जुड़कर मैं जिस विचार में विश्वास रखता हूँ उसी क्षेत्र में कार्य करने का मौका मिला, यह मेरे लिए आनंद की बात है। कृषि को शाश्वत बनाकर गाँव को समृद्ध बनाना ही मेरा लक्ष्य है। मुझे गर्व है कि मैं उच्च शिक्षा प्राप्त कर गाँव में रहकर गाँव के लिए कार्य कर रहा हूँ। आखिरकार नेतृत्व का सही उद्देश्य लोगों को सही रास्ता दिखाना ही तो है।''

''मैं गाँव के लिए कार्य कर रहा हूँ इसमें मुझे अखंड आनंद की अनुभूति होती है'': सागर चौधरी, फाउण्डेशन के कार्यकर्ता

ग्रामीण महिला की आवाज

''मैं भागुबाई रमेश बारेला चोपड़ा तहसील के वैजापुर गाँव में रहती हूँ। एक परिवार के लिए आवश्यक पोषक तत्व आधारित खुराक, औषधि वनस्पति मिलनी चाहिए। किंतु कम पानी में तथा अपर्याप्त जमीन पर यह कैसे संभव किया जाए यह एक गंभीर प्रश्न हमारे सामने था। लेकिन गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन के कार्यकर्ताओं ने हमें हमारे पास उपलब्ध संसाधनों से रूबरू करवाया। पास की जमीन को साफ किया, अब इस जमीन पर तेरह प्रकार की सब्जी है, वह भी बीना किसी रसायन के। जो पहले बंजर जमीन थी वह अब हमें हर रोज आवश्यक सब्जी तथा औषधि प्रदान करती हैं। कार्यकर्ता ने हमें गंगा मां मॉडेल के बारे में बताया, हमारी समझ में इतना कुछ नहीं आ रहा था किंतु कार्यकर्ता हमारे साथ रहकर उपलब्ध जमीन तथा पानी के योग्य इस्तेमाल के द्वारा यह संभव कर दिखाया। अब तो आसपास के कई गाँव के लोग इस मॉडेल को देखने के लिए आते हैं।''

हमारे ही संसाधन हमारी ही मेहनत – किचन गार्डन मुआइने के दौरान सागर चौधरी, राधाबहन, डॉ. अनिल काकोडकर तथा अंबिका जैन

गाँधी नाकारायचाय... पण कसा? – मंचन के दौरान का एक दृश्य

''गाँधी नाकारायचाय... पण कसा?'' विशेष मंचन

गाँधीजी के जीवन के कई विशिष्ट पहलू हैं। एक ऐसा व्यक्ति जिसे विश्व की कई विश्वविद्यालयों ने अपने अभ्यासक्रम में सम्मिलित किया हैं। न वे अर्थशास्त्री थे, न चिकित्सक विद्वान थे, न पर्यावरण के क्षेत्र में पांडित्य प्राप्त किया था और न ही शिक्षा के क्षेत्र में कोई विद्यावाचस्पति की पदवी हासिल की थी। एक ऐसा व्यक्ति जो कई विषयों में विद्वान न होते हुए भी विश्व के कई मुख्य विषयों में उनके विचार को पढ़ाया जाता हैं। यह इसलिए क्योंकि उनका जीवन इन विषयवस्तु के शाश्वत तत्त्वों के केंद्र का मूल था। फिर भी कुछ लोग है जो गाँधीजी के जीवन व विचारों के प्रति कई तरह की गलत आलोचना को फैलाते हैं। यह नकारात्मक विचार को फैलाने में कुछ समूह युवाओं को अपना हथियार बनाते हैं और गलत जानकारी को फैलाकर गाँधीजी और उनके विचार को नफरत का रूप देने का प्रयास करते हैं। इसका जवाब है 'गाँधी नाकारायचाय... पण कसा?' इस मराठी अभिवाचन नाटक में गाँधी पर लगाई गई कई आलोचना के वास्तविक सत्य को अधिकृत जानकारी पर आधारित दर्शाया गया है।

इस अभिव्यक्ति में गाँधीजी से जुड़े कई व्यक्तियों को लेकर सवालों को दर्शाया गया है। जैसे शहीद भगतसिंह को बचाने के लिए गाँधी ने क्या किया? या डॉ. अम्बेडकर के साथ उनका विरोध या फिर कस्तूरबा के प्रति अन्याय किया है, या देश के विभाजन में वे ही जिम्मेदार हैं? ऐसे कई प्रश्नों के अधिकृत जानकारी पर आधारित उत्तर वास्तविक तथ्यों के साथ इस नाटक में दर्शाने का प्रयास किया गया है।

गाँधी तीर्थ स्थित कस्तूरबा सभागृह में गाँधी निर्वाण दिन पर इस नाटक का विशेष मंचन किया गया। इस अवसर पर जलगाँव शहर से कई लोग इस कार्यक्रम को देखने पधारे थे। फाउण्डेशन के संचालक अशोकभाऊ, दलीचंद ओसवाल, फाउण्डेशन के सलाहकार डॉ. भालचंद्र नेमाडे, ना. धो. महानोर, निशा जैन, अंबिका जैन तथा अन्य वरिष्ठ सज्जन उपस्थित थे।

इस नाटक का लेखन तथा दिग्दर्शन परिवर्तन संस्था जलगाँव के शंभू पाटील ने किया तथा अभिवाचक के रूप में मंजुषा भिडे, नारायण बाविस्कर, होरिलसिंग राजपूत, मंगेश कुलकर्णी, हर्षल पाटील तथा विजय जैन ने भूमिका अदा की। पार्श्व संगीत राहुल निंबाळकर, निर्मिती प्रमुख के रूप में वसंत गायकवाड तथा विशाल कुलकर्णी ने कार्य किया है। कार्यक्रम के आरंभ में अनुभूति अंतरराष्ट्रीय विद्यालय के शिक्षक तथा छात्रवृंद ने 'घूम चरखा घूम' गीत प्रस्तुत कर वातावरण को मुग्ध बनाया। मुंबई की रहने वाली स्मिता गुप्ता द्वारा लिखित गाँधीजी के तीन बंदर पर आधारित बच्चों को प्रेरणा देने वाली किताब '३' का विमोचन भी इसी कार्यक्रम के आरंभ में किया गया। कार्यक्रम का सूत्र संचालन अश्विन झाला ने किया।

मंचन के बाद अपने विचार साझा करते डॉ. भालचंद्र नेमाडे

'गाँधी तीर्थ – महात्माचे यथार्थ दर्शन' डाक्यूमेन्टरी का विमोचन

जलगाँव स्थित लाईव ट्रेंड मीडिया ग्रुप ने गाँधी तीर्थ पर 'गाँधी तीर्थ – महात्माचे यथार्थ दर्शन' नामक एक मराठी डाक्यूमेन्टरी तैयार की है। गाँधी नाकारायचाय...पण कसा? इस विशेष कार्यक्रम के अवसर पर इस डॉक्यूमेन्टरी का विमोचन मान्यवरों के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर लाईव ट्रेंड के संपादक शेखर पाटील, विवेक उपासनी, फाउण्डेशन के संचालक अशोक जैन, दलीचंद ओसवाल, ना.धो. महानोर तथा डॉ. भालचंद्र नेमाडे उपस्थित थे।

संचालक मंडल तथा सलाहकार मंडल की संयुक्त बैठक में उपस्थित गणमान्य

संचालक मंडल की बैठक

फाउण्डेशन की संचालक मंडल की बैठक २६ जनवरी २०२० को जैन हिल्स पर आयोजित हुई। बैठक अध्यक्ष की भूमिका डॉ. अनिल काकोडकर ने अदा की, इस बैठक में तुषार गाँधी, अशोक जैन, अनिल जैन, दलीचंद ओसवाल तथा ज्योति जैन उपस्थित थे। श्रीमान अनिल काकोडकर ने इस बैठक को विशेष बैठक के रूप में दर्शाई क्योंकि इस बैठक में संचालक मंडल तथा सलाहकार मंडल को मिलाकर संयुक्त रूप से आयोजित की गई थी। फाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ. अनिल काकोडकर ने फाउण्डेशन के सलाहकार तथा वरिष्ठ गाँधीजन राधाबहन भट्ट, डॉ. भालचंद्र नेमाडे, ना. धो. महानोर तथा डॉ. के. बी. पाटील की विशेष उपस्थिति के संदर्भ में संचालक मंडल तथा सलाहकार मंडल के सदस्यों का स्वागत किया। इस बैठक से एक दिन पहले दोनों मंडल ने फाउण्डेशन के अंतर्गत चोपड़ा तहसील में कार्यरत बा–बापू१५० की गतिविधियों का मुआइना किया। इस मुलाकात के बाद अध्यक्ष महोदय ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि बा–बापू १५० के अंतर्गत चल रहे कार्य शाश्वत समाज की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे।

इस बैठक में बा–बापू १५०वीं जयंती के उपलक्ष्य में पिछले तीन माह के दौरान आयोजित गतिविधियों की प्रस्तुति तथा कार्यान्वित किए गए कार्यक्रम की रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी।

गाँधी तीर्थ बन रहा है प्रेरणा तीर्थ

सत्य, अहिंसा, आपसी सहयोग की भावना का वैश्विक स्तर पर विकास करने के उद्देश्य से डॉ. भवरलालजी जैन ने गाँधी तीर्थ का निर्माण किया है। यह संग्रहालय बालक, युवा तथा वृद्ध को अपने स्वरूप में गाँधीजी के जीवन तथा विचार को उनके माध्यम में प्रस्तुत करता हैं। इसलिए यहाँ आने वाले हर एक आगंतुक इससे प्रभावित और प्रेरित होते हैं। वर्तमान संदर्भ में गाँधीजी को प्रस्तुत करने के लिए बेहतर माध्यमों का चयन किया गया है यही इस संग्रहालय की विशेषता हैं।

गाँधी तीर्थ संग्रहालय से प्रेरणा प्राप्त कर देश – विदेश में गाँधीजी पर कई संग्रहालय बने हैं। हाल ही में महाराष्ट्र प्रशासन के कैबिनेट मंत्री श्री सुनील केदार ने अपने मंडल के साथ गाँधी तीर्थ संग्रहालय की मुलाकात की है। उद्देश्य यह था कि महाराष्ट्र प्रशासन वर्धा में गाँधीजी पर संग्रहालय तैयार कर रहा है। इसका स्वरूप क्या होना चाहिए, इस संदर्भ में यह मंडल देश में स्थित उत्कृष्ट संग्रहालयों की मुलाकात कर रहा है। इस सिलसिले में श्रीमान सुनील केदार गाँधी तीर्थ पधारे और करीब दो घंटे से अधिक समय गाँधी तीर्थ पर बिताया। यहाँ स्थित प्रदर्शनी तथा कार्यकर्ताओं से मिलकर वे काफी संतुष्ट हुए और एक सही संग्रहालय की संरचना की प्रेरणा यहाँ से लेकर गए।

गाँधी तीर्थ मुलाकात के दौरान श्रीमान सुनिल केदार तथा अन्य विशिष्टजन

गाँधीजी की कहानियों के माध्यम से मूल्य सिंचन का प्रयास – तन्वी मल्हारा

गाँधी विचार प्रसार में युवाओं का योगदान

युवा प्रतिभाएं गाँधी विचार के प्रति खास रुझान रखती दिखाई देती हैं। पिछले एक दशक के दौरान हमारा अनुभव यह रहा है कि युवाओं को गाँधीजी के विचार अगर उनके समझने लायक भाषा व माध्यम में परोसे जातें है तो वह उनके लिए प्रेरक बनते हैं। ऐसा किया जाए तो वे इस विचार के प्रति आस्था भाव से जुड़ते है और आचरण में लाते हैं।

फाउण्डेशन युवाओं के बीच कई तरह की गतिविधियां आयोजित करता है, उनमें इन्टर्नशिप के तहत युवा गाँधी विचार पर आधारित गतिविधियों के साथ जुड़ते हैं और एक सप्ताह से लेकर छह महीने तक का समय स्वेच्छा से देते हैं।

अबतक कई युवा इस इन्टर्नशिप कार्यक्रम में आ चुके हैं। हाल ही में जलगाँव की तन्वी मल्हारा ने अपना अमूल्य समय फाउण्डेशन के साथ बिताया। गाँधी विचार से प्रेरित तन्वी ने नूतन प्रयोग से गाँधी विचार के विभिन्न तत्त्वों को ग्रामीण भाग की विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के साथ साझा किया। मूल्य शिक्षा से संबंधित खेल तथा मोहन के बचपन की कहानियों के माध्यम से बच्चों में अच्छी आदतों का निर्माण करने का कार्य तन्वी ने छात्रों के साथ किया। यह कार्य जलगाँव जिले के खर्ची, दापोरा तथा शेरी गाँव की शाला में आयोजित किया गया। फाउण्डेशन परिवार तन्वी मल्हारा के कार्य की सराहना करता है और आने वाले भविष्य में वे मूल्य आधारित जीवन की दिशा में आगे बढ़ती रहें ऐसी शुभकामना देता है।

शांति का वाद्य बना तू मुझे प्रभु शांति का वाद्य बना तू मुझे...

पाठकों के अभिमत

*‘**खोज गाँधीजी की**’ पत्रिका पर हमें पाठकों के अभिमत हमेशा प्राप्त होते रहते हैं। प्रस्तुत है पिछले अंक के लिए प्राप्त कुछ पाठकों के अभिमत।*

– संपादक

आज के नकारात्मक और विध्वंसकारी माहौल में सकारात्मक और सृजनात्मक सोच के लेख प्रकाशित करने के लिए साधुवाद।

मूल्य शिक्षा कार्यक्रम के बारे में जानकर विचलित हो गया। हमें इस अमूल्य शिक्षा की आवश्यकता है और इसे प्रचारित करने की जरूरत भी। आप यह कार्य कर रहे हैं इसके लिए साधुवाद।

***महेश लोढा**, साप्ताहिक पोस्ट*

....

Pleasure reading the Khoj, especially the articles focussing on empowerment of women, education, caste less society and many eternal values upheld by Bapuji, which help us to cultivate and propagate a humane lifestyle as envisioned by Bapuji. We thank and congratulate all for wonderful content and delivery.

P. L. Prajapati

Principal, EMRS, Khodada, Tal. Nizar, Dist. Tapi

....

आभार! मैं यह पत्रिका पढ़कर अभिभूत हूँ, मैं मध्यप्रदेश के सभी मित्रों को अध्ययन हेतु प्रेषित कर रहा हूँ, इटारसी में इस वर्ष के उपलक्ष्य में गाँधीजी को लेकर हम कई आयोजन कर रहे हैं। आपसे जुड़कर हमें नई दृष्टि मिलेगी। गाँधीजी पर अनुपलब्ध सामग्री देखकर और पढ़कर नये अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

प्रो. कश्मीर उप्पल, इटारसी, मध्यप्रदेश

Dear sir,

Thanks for sending me the journal खोज गाँधीजी की. You and your team needs to be congratulated. The printing and editing are really praiseworthy. Gandhi was never more relevant than today. The choice of articles is also good. May I put forth some mundane suggestions?

1) Have ISSN No., some scholar referees and enlist this in UGC approved journals. This will raise value of this journal and good scholars will be motivated to send their articles to you.

2) In the changing times, we require to adopt new Gandhian programs like, Sustainable development, Small is Beautiful, Human Rights, Grass root democracy, Happiness index etc. Can we become more inclusive and accommodate them in our fold?

3) Every thing on and by Gandhi is available in documents. Once a while reprinting them is okay. You have to include articles on new programs and new interpretations to attract young generation.

You may discard my suggestions if you feel that they are not up to your standards.

Dr. Vidyut Joshi,

Adjunct Professor, Gujarat Vidyapith

....

It is very good effort.

K. V. Biju

Swadeshi Andolan

अतिथि देवो भव!

महात्मा गाँधी के जीवन एवं उनके कार्यों को गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन स्थित ‘खोज गाँधीजी की’ संग्रहालय में अत्याधुनिक तकनीक के साथ समन्वित करके युवाओं के लिए कैसे उपयोगी बनाया गया है? इसे देखने व समझने के लिए अतिथियों का स्वाभाविक प्रवाह होता रहता है। अतिथि हमारे लिए देवतुल्य हैं।

शांतीलाल मुथा, अध्यक्ष अखिल भारतीय जैन संघटना, पुना ०४.०२.२०२०

प.पू. श्री. महासती विजयाश्रीजी, ‘आर्या’ म. सा., ०५.०२.२०२०

गिरीष व्यास, विधायक, नागपूर ०७.०२.२०२०

समीर परांजपे, ऑडिटर, ग्रैंट थोरंटन, मुंबई ०९.०२.२०२०

गेरी रिजवेल, लंदन ०९.०२.२०२०

R.N.I. No. MAHBIL/2017/77584 / Postal Registration No.: JAL/421/2019-2021
Posted at Jalgaon head post office, from 2nd of every month, Date of publication: 28th of every month.

चित्र शृंखला – ०२

महात्मा को नमन

महात्मा गाँधी के अंतिम समय की रोचक जानकारी को प्रस्तुत करती 'महात्मा को नमन' चित्र शृंखला

महात्मा गाँधी के पार्थिव शरीर के पास मनु गाँधी और आभा गाँधी गीता पाठ करते हुए, बिड़ला हाऊस, दिल्ली

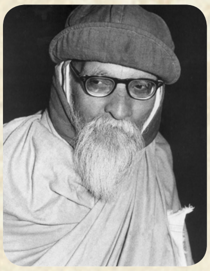

"जिन दिनों में काशी मैं था, मेरी पहली अभिलाषा हिमालय की कंदराओं में जाकर तप-साधना करने की थी। दूसरी अभिलाषा थी, बंगाल के क्रांतिकारियों से भेंट करने की। लेकिन इनमें से एक भी अभिलाषा पूरी न हो सकी। समय मुझे गाँधीजी तक ले गया। वहाँ जाकर मैंने पाया कि उनके व्यक्तित्व में हिमालय जैसी शांति है तो बंगाल की क्रांति की धधक भी। मेरी दोनों इच्छाएं पूरी हुई।"

– विनोबा भावे

क्या आप जानते है?

जिस वक्त बापू की हत्या हुई उसी वक्त हत्यारे ने भागने का प्रयास किया, वहाँ मौजूद माली ने उनपर वार किया हत्यारा थोड़ा जख्मी हुआ। माली ने तथा अन्य लोगों ने उसे पकडलिया। बापू के शव को तुरंत बिड़ला भवन में लाया गया। मनुबहन, आभाबहन तथा अन्य लोगों ने उस रात गीता पाठ तथा ग्रंथसाहब का पाठ रात भर किया।

Printed Matter

IF UNDELIVERED PLEASE RETURN TO:
Gandhi Research Foundation
Gandhi Teerth, Jain Hills, Jalgaon - 425001 (M.S.) India; Tel: +91-257-2264801

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन (स्वामित्व) के लिए खोज गाँधीजी की यह मासिक मुद्रक, प्रकाशक अशोक भवरलाल जैन, संचालक, गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन ने आनंद पब्लिकेशन्स, १०६/१, मुसली फाटा, ता.धरणगाँव, जि.जलगाँव-४२५१०३, महाराष्ट्र से मुद्रित करके गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन, गाँधी तीर्थ, जैन हिल्स, पोस्ट बॉक्स नं. ११८, जलगाँव-४२५००१, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक – अश्विन भामाभाई झाला* (*पी.आर.बी. कायदे के अनुसार संपादकीय जिम्मेदारी इनकी है।)

प्रकाशन: २ मार्च, २०२०